RETHINK INDIA

PUNIT SAHU

Rethink India

Publishing-in-support-of,

FSP Media Publications

RZ 94, Sector - 6, Dwarka, New Delhi - 110075
Shubham Vihar, Mangla, Bilaspur, Chhattisgarh - 495001

Website: *www.fspmedia.in*

© Copyright, Author

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

ISBN: 978-81-19927-13-5

Price: ₹ 185.00

The opinions/ contents expressed in this book are solely of the author and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of Publisher

Printed in India

Rethink India

By

Punit Sahu

Dedicate To

Today's People

आभार

सबसे पहले मैं अपने माता पिता का आभारी हूँ, जिन्होंने मुझे शहर से दूर दूसरे शहर में भेजा, जहाँ मुझे एक अलग माहौल मिला और हर एक शख्स से कुछ सीखने मिला।

मैं अपने चाचा जी का बहुत–बहुत आभारी हूँ, जिन्होंने मेरा साथ दिया मेरे विचार को किताब बनाने में।

साथ ही में अपने परिवार का आभारी हूँ, जिन्होंने मुझे एकांत दिया, खुद में खो जाने के लिए।

और साथ ही आभार हूँ उस शख्स का जिसकी वजह से मेरे विचार इस किताब में समा गए।

प्रस्तावना

प्रातः बेला में पूर्व दिशा में मंद–मंद मुस्कान बिखेरती हुई उषा जब पृथ्वी पर अपना विकिरण करती है तो पक्षी आनंद विभोर होकर चहचहाने लगते हैं।

उनका कलख हृदय को आकर्षित करता है।

छोटा सा बीज वृक्षरुप में परिवर्तित होकर जब लहलहाता है तो उसकी हरीतिमा मनमोहक होती है।

पहाड़ो से निकलने वाली नदियाँ कल– कल करते हुए समुद्र में समाने के लिये प्रवाहवान होती हैं।

मानवमन में भी पड़े रहते हैं लेकिन जब सोई हुई भावनाएँ बाहर आने के लिये व्यथित एवं व्यग होती है तभी लेखक की लेखनी से बहती है व्यथाएँ।

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने सामाजिक विकृतियों से व्यथित अपनी भावनाओं को अपनी लेखनी से व्यथित अपनी भावनाओं की अपनी लेखनी से प्रवाहित किया है और पाठक उसे अवश्य सराहनीय करार देंगें।

सिनेमा

यह शब्द हमारे ज़हन में आते ही कई प्रकार की रंगीन छवियाँ हमारी आँखो के सामने उभरने लगती है।

और कई कहानियाँ उनके मनोरम दृश्य स्पष्ट होने लगते हैं। मगर हम केवल उन दृश्यों की ओर आकर्षित होते

हैं जिनमें अधिकांशतः पश्चिमी सभ्यता से सुसज्जित नायिकायें नृत्य व कला प्रस्तुत करने लगती हैं।

सिनेमा का एक पहलू यह है कि, हमारी युवा पीढ़ी इस माया नगरी को वास्तव में सुगम मानकर आत्मसात कर रही है।

जिस कारण आज समाज में युवा पीढ़ी के अंतर मन में भ्रम, उत्तेजना, क्रोध, सौंदर्य प्रतिस्पर्धा बढ़ती जा रही है।

साथ ही युवा पीढ़ी सिनेमा की कहानी को अपने जीवन से जोड़कर जीने की कोशिश करती है।

जिस कारण समाज में आये दिन बदले कि भावना से शिकार हुए युवा–युवतियाँ आम तौर पर देखे जा सकते हैं।

सिनेमा में बढ़ती पश्चिमी सभ्यता के कारण हमारी युवा पीढ़ी गलत रास्ते पर जा रही है।

जिस कारण हमारी युवा पीढ़ी अधिकांशतः नशे में पड़ जाती है और युवतियाँ बढ़ते सौंदर्य प्रचलन के कारण गलत संगत में पड़ जाती है।

जिससे आगे चलकर उन्हें इसकी बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ती है।

सिनेमा के कारण आज हमारे देश में पश्चिमी सभ्यता का परचम लहरा रहा है और हमारी अपनी सभ्यता का परचम विलुप्त होता जा रहा है।

नैतिक मूल्यों की विरासत के साथ हमारी अपनी पहचान व धरोहर गुम होती जा रही है।

सिनेमा वास्तव में हमारी बहुत समस्याओं का जन्मदाता के रूप में भी उभरा है। समाज में इसके कई बुरे प्रभाव देखने को मिल जाते हैं।

हम सिनेमा से सिखते तो अच्छा हैं पर साथ ही कई बुराईयों को अपना रहे हैं। जिसका बुरा प्रभाव हमारे घर परिवार, समाज, सभ्यता, विरासत व देश पर भी होता है।

भारतीय सिनेमा को चाहिए कि, गलत छवियाँ, गलत प्रकार के कार्यक्रम व संगीत पर रोक लगाए और साथ ही सांस्कृतिक मंचन पर छवियाँ बनाए, जिससे युवा पीढ़ी

को सही मार्गदर्शन मिले व सभ्यता व धरोहर की सही जानकारी मिले, जिससे युवा पीढ़ी गुमराह होने से बच जाए व अपना और अपने देश का गौरव बढ़ाएँ।

यह संभव है, अगर सिनेमा रचयिता अपने व्यापारिक उद्देश्य को प्राथमिकता देना बंद कर दें, साथ ही सही दिशा में काम करें, तो सचमुच सिनेमा की तस्वीर बदल जाएगी।

हमारे देश में सिनेमा को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। मगर लोगों में इसके प्रति विशेष जानकारी नहीं है।

सिनेमा के संबंध में लोगों में आम जानकारी है जो स्पष्ट नहीं है।

लोगों को चाहिए कि, इसके दोनों पहलुओं पर गौर करे और समझें।

सिनेमा जहाँ हमें एक ओर उत्तेजित विषय परोसता है, तो वहीं विभिन्न प्रकार कि जानकारियों से अवगत करवाता है।

RETHINK INDIA

भविष्य का क्या होगा, ये सोच के अपने वर्तमान को बर्बाद ना कर, अपने वर्तमान को खूबसूरत बना, भविष्य तो अपने आप खूबसूरत हो जाएगा।

लेखक से संपर्क हेतु :
✉punitsahu@educreation.in

FSP
FSP MEDIA PUBLICATIONS

BOOK AVAILABLE
Flipkart
GET IT ON Google Play
amazon
amazonkindle

EBOOK AVAILABLE

ISBN 978-81-19927-13-5
9 788119 927135